राष्ट्रीय चेतना के जागृति में बिहार के रियासती घरानों की भूमिका

डॉ. कुमार समर्पण

भारतीय रियासतों या देशी राज्यों की स्थापना तथा ब्रिटिश साम्राज्य के साथ उनका सम्बन्ध आधुनिक भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण विषय है। अंग्रेजी शासनकाल में भारत दो भागों में विभक्त था, ब्रिटिश भारत एवं भारतीय देशी राज्य/देशी राज्यों की संख्या लगभग 6 सौ थी। देशी राज्यों के अधीन देश के क्षेत्रफल का 15 प्रतिशत तथा 26 प्रतिशत जनसंख्या थी। इन देशी राज्यों की स्थापना मुगल काल में हुई थी। सर ली. वार्नर के अनुसार 1919 ई. के पूर्व भारतीय देशी राज्यों के प्रति ब्रिटिश सम्बन्ध के तीन युग थे। घेरे की नीति का युग,अधीनस्थ अवस्था की नीति का युग और अधीनस्थ संघ नीति का युग। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं राष्ट्रीय चेतना के जागृति में बिहार के रियासती घरानों के साथ–साथ भारत के लगभग सभी रियासती घरानों का महत्वपूर्ण योगदान है और यह योगदान चिन्तन, चेतना और संघर्ष तक ही सीमित नहीं है अपितु बिन्दु–बिन्दु पर शिलालेख की तरह अंकित है। देश के नरेशों में आपसी फूट, राजनीतिक अदूरदर्शिता, राष्ट्रीयता के भाव की कमी, जाति गत विद्वेष एवं तज्जनित संकीर्णता, तथा व्यक्तिगत स्वार्थ की प्रधानता के कारण भारत वर्ष को विदेशियों की परतन्त्रता की कठिन बेड़ी के बंधन में चिरकाल तक जकड़ा रहना पड़ा था, पर इतिहास इसका साक्ष्य देता है कि उस अवधि में भी वह उस दीन अवस्था से मुक्ति पाने के हेतु सदैव छटपटाता रहा है और समय–समय पर उसके लिये परिस्थिति के अनुकूल संयत भी हुआ। अंग्रेजों के भारत में शासन के आरंभ से एक शदी पश्चात् देश में स्वतंत्रता की भावना अति प्रबल हो उठी और उसकी लहर सभी दिशाओं में फैल गयी।